एक प्रक्रिया के तौर पर आकलन

छोटेलाल तंवर

अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन पिछले 15 सालों से स्कूलों मे बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए काम कर रहा है। शिक्षा के बारे में यह माना जाता है कि शिक्षा सिर्फ सैद्धान्तिक विषय भर नहीं है बल्कि शैक्षिक सिद्धान्त को व्यवहार में उतारना या रोजमर्रा की कक्षा-कक्षीय शिक्षण प्रक्रियाओं से जोड़ना भी है। सिद्धान्त को व्यवहार में उतारने की चुनौती तब और बढ़ जाती है जब आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों के साथ काम करते हैं। अजीम प्रेमजी स्कूल के जरिए शिक्षा की जमीनी चुनौतियों से जूझते हुए बच्चों के लिए अर्थपूर्ण शिक्षा का प्रयास करना ही हमारा मकसद है।

अजीम प्रेमजी स्कूल बहुत पुराने नहीं हैं। दरअसल, सरकारी स्कूलों में बच्चों की बेहतर शिक्षा के प्रयास में यह सवाल सामने आने लगा कि शिक्षा पर बातचीत करना आसान है, उसे व्यवहार में लाकर दिखाना मुश्किल काम है। अजीम प्रेमजी स्कूलों की शुरुआत भी कुछ ऐसे सवालों से जूझते हुए हुई। अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के द्वारा स्कूल चलाने की दूसरी वजह यह भी थी कि यदि अपने स्कूल संचालित किए जाएं तो इससे फाउन्डेशन में कार्यरत सदस्यों को भी सीखने के अवसर मिलेंगे।

संस्था ने उपर्युक्त सवालों पर गम्भीरता से विचार करते हुए अपनी रणनीति में प्रायोगिक स्कूल आरंभ करने का निर्णय लिया। एक ऐसा स्कूल जिसमें शैक्षिक सोच को व्यवहार में लाया जा सके। इस निर्णय के कुछेक महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं, जो इन स्कूलों के आधार के तौर पर देखे गए। इनमें एक है, स्कूल वाजिब लागत में अपेक्षित स्तर की गुणवत्ता की शिक्षा मुहैया कराए। स्कूल संचालन एवं बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं की समझ को समृद्ध करे और सिद्धान्तों को व्यवहार में लाने की उपयुक्त परिस्थितियों को समझा जा सके।

आकलन पर आने से पहले हम थोड़ी चर्चा अजीम प्रेमजी स्कूल के परिचय, स्कूल और शिक्षा के प्रति हमारी समझ पर करेंगे। अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन कुल 6 स्कूल संचालित कर रहा है जिनमें से दो स्कूल राजस्थान के टोंक एवं सिरोही जिले में हैं, दो स्कूल उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी एवं उधमसिंह नगर में संचालित हैं, एक स्कूल छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में और एक स्कूल कर्नाटक के यादगीर जिले में संचालित है। मैं राजस्थान के टोंक के स्कूल में कार्यरत हूं। स्कूल संचालन से संबंधित सामान्य समझ के साथ इस लेख में मैं टोंक के अपने अनुभवों पर चर्चा करूंगा। अजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक की शुरुआत अप्रैल, 2012 में 85 बच्चों के साथ हुई। फिलहाल कक्षा 1 से 7 तक कुल 136 बच्चे इस स्कूल में अध्ययनरत हैं। इनके साथ 8 शिक्षक-शिक्षिकाएं, एक मुख्य अध्यापक और एक कार्यालय प्रबंधन स्टाफ सहित कुल 10 लोग काम कर रहे हैं।

फाउन्डेशन का मुख्य सरोकार शिक्षा के जरिए समता एवं न्याय के मूल्यों पर आधारित समाज के निर्माण की दिशा में बढ़ना है, जो कि हमारे संविधान का भी लक्ष्य है। शिक्षा संबंधी समझ के लिए शिक्षा का अधिकार कानून, 2009; राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 को आधार बनाया गया है।

इन स्कूलों का पाठ्यक्रम एवं सीखने-सिखाने की प्रक्रिया इस बात पर जोर देती है कि बच्चों की अवधारणात्मक समझ मजबूत हो। साथ ही, सीखने-सिखाने की ऐसी लचीली व्यवस्था कायम की जाए, जिसमें बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता हो और सीखना बच्चे के लिए आन्तरिक प्रेरणा व आनन्द का जरिया बने। यहां दो बातों को स्पष्ट करना आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया ढीले-ढाले ढंग से चलती रहे बल्कि हमारा ध्यान इस बात पर रहता है कि शिक्षार्थी की उपलब्धि के स्तर का भी लगातार पता चल सके।

दूसरा पक्ष, सीखने के आनन्द का है, इसे भी स्पष्ट करना जरूरी है। अक्सर ये कहां जाता है कि सीखने की प्रक्रिया आनन्ददायी होती है। हमें लगता है कि अनेक बार यह सच हो सकता है कि सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को आनन्द आए। लेकिन अनेक बार यह जूझने, असफलता और परेशानी की वजह भी बनती है। यह सही है कि चीजों को समझ लेने के बाद आनन्द का अनुभव हो। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आकलन की प्रक्रिया में इन सभी बातों को जेहन में रखना जरूरी है। अजीम प्रेमजी विद्यालयों का मानना है कि हर बच्चा सीखने मे समर्थ होता है, बशर्ते उस बच्चे की जरूरतों को समझते हुए उसे सीखने की प्रक्रियाओं मे जोड़ा जाए। इसके अलावा हर बच्चा समृद्ध भाषायी अनुभवों व जिज्ञासा के साथ स्कूल आता है। ऐसी स्थिति में स्कूल बच्चे के पास मौजूदा समझ को उसके सीखने में जितना इस्तेमाल करता है उस बच्चे विशेष का सीखना/विकास भी उतने स्तर तक हो पाता है।

फाउन्डेशन का मानना है कि 'सीखना' एक ऐसी जीवंत प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है और यदि सीखना अनवरत चलने वाला सिलसिला है तो फिर सवाल उठता है कि सिखाना किस ढंग से हो रहा है? क्या सिखाया जा रहा है? कैसे हमें पता चले कि अमुक बच्चे ने अमुक अवधारणा सीख ली है? यानी, सीखे हुए का आकलन भी लगातार होते रहना चाहिए। हमारे लिए आकलन शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा है जो साल भर चलता रहता है।

सीखना पूर्व में बनी अवधारणा के साथ नई अवधारणा के मध्य होने वाली अंतःक्रिया है। अतः यह जानना जरूरी हो जाता है कि बच्चे लगातार सीख भी रहे हैं अथवा नहीं। क्योंकि आकलन का बड़ा उद्देश्य सीखने एवं सिखाने वाले को परस्पर फीडबैक देना है। अतः आकलन शिक्षक की शिक्षण योजना बनाने की आवश्यक प्रक्रिया का हिस्सा है। इसीलिए आकलन को परंपरागत परीक्षा प्रणाली से अलग करके देखने की आवश्यकता है।

अजीम प्रेमजी स्कूल में आकलन

अजीम प्रेमजी स्कूल का मानना है कि सीखना व आकलन दो जुदा प्रक्रियाएं नहीं हैं बल्कि दोनों प्रक्रियाएं ऐसी हैं जिन्हें अलग-अलग खांचों मे देखना लगभग असम्भव ही लगता है। अजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक में कक्षावार व समूहवार वार्षिक लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है जो सत्र की शुरुआत में शिक्षक समूह आपसी विमर्श के साथ करता है। यहां समूहवार और कक्षावार दोनों ही शब्द इस्तेमाल करने का एक ही मतलब है। हम मूलतः राजस्थान बोर्ड के पाठ्यक्रम को अपनाते हैं, इसलिए हमारे यहां कक्षाओं की व्यवस्थाएं भी राजकीय पैटर्न पर आधारित है। जब हम समूह की बात करते हैं, तो जो बच्चे अपनी उम्र के अनुसार कक्षाओं में हैं, उनको कक्षा के स्तर पर लाने हेतु अलग-अलग स्तरों पर काम करने की जरूरत होती है। कहने का आशय यह है कि हम कक्षा के अनुरूप पाठ्यक्रम को जरूर ध्यान मे रखते हैं, परन्तु बच्चों के स्तरों के अनुरूप उपसमूहों में शिक्षण करवाते हैं।

वार्षिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु का नक्शा बनाया जाता है उसके बाद पाक्षिक इकाई योजना बनाते हैं जो हरेक दिन के मुताबिक क्रियान्वित होती है। इकाई योजना (यूनिट प्लान) पर काम के दौरान हम दो से तीन बार रचनात्मक आकलन करते हैं जो बच्चे को दिए गए असाइनटमेन्ट, कक्षा कार्य, प्रोजेक्ट कार्य, गृहकार्य और कक्षा में की गई चर्चाओं के रूप में होता है। इससे हमें यूनिट विशेष के बारे में बच्चे की समझ की जानकारी मिलती है जिसे नियमित योजना बनाने मे इस्तेमाल किया जाता है। साथ ही शिक्षण के गुणवत्ता के स्तर की जानकारी भी मिलती है।

रचनात्मक आकलन से मिलने वाली सूचनाओं को बच्चे के रिकॉर्ड हेतु बनाए गए रजिस्टर या डायरी में टिप्पणियों के रूप में दर्ज कर लिया जाता है। यूनिट के पूरा होने के बाद बच्चे की समझ को जांचने हेतु अभ्यास-पत्रक के जरिए आकलन किया जाता है जो उस इकाई विशेष की समग्र समझ के बारे मे जानकारी देता है। इस तरह इकाइयों के क्रम में आगे बढ़ते हुए अलग-अलग ढंग से बच्चों की समझ का रिकॉर्ड रखा जाता है, जैसे रचनात्मक आकलन की टिप्पणियां जो बच्चों की कॉपियों में या बच्चों के आकलन की डायरी/रजिस्टर मे दर्ज होती है।

योगात्मक (समेटिव) आकलन विषयवार बच्चे की दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। उसे भी बच्चे की दक्षताओं के क्रम में डायरी में दर्ज किया जाता है। इसके साथ ही बच्चों के साथ काम में लिए जा रहे चुनिन्दा अभ्यास पत्रकों (वर्कशीट) को बच्चों के पोर्ट फोलियों में रखा जाता है। इकाइवार हुए काम का संयोजन फिर से छमाही में किया जाता है। नवम्बर माह में बच्चों के साथ जिन इकाइयों में काम होता है उसका योगात्मक आकलन मौखिक व लिखित रूप में किया जाता है। यह बच्चे की विषयवार दक्षताओं को समझने पर केन्द्रित होता है।

इस तरह बच्चों के साथ हो रहे काम को व्यवस्थित रूप से देखना और उसका व्यवस्थित रिकॉर्ड रखने से न केवल शिक्षार्थी की प्रगति का पता चलता है, बल्कि शिक्षक के लिए बच्चे के साथ आगे काम करने का तरीका भी पता चलता है। इस प्रक्रिया के कुछ अहम् पक्ष हैं, जिन पर बात करना जरूरी है। हम छमाही तौर पर बच्चों के रिपोर्ट कार्ड भी तैयार करते हैं, जो बच्चों की विषयवार दक्षताओं पर बनी समझ, कला, खेल व बच्चे के व्यवहार के पक्षों पर

** लेख में बच्चे का नाम बदल दिया गया है।*

आधारित होते हैं। इन्हीं को अभिभावकों के साथ साझा किया जाता है। कुछ टिप्पणियां जिन्हें रिपोर्ट कार्ड में दर्ज करने की कोशिश करते हैं, उनके उदाहरण आगे दिए गए हैं।

मनहर गणितीय अवधारणाओं को समझने में खास दिलचस्पी दिखा रहा है। अब हासिल के बाकी मे उधार की अवधारणा में निहित तर्क को समझता है। कुछ सवालों को विस्तार से समझाने की जरूरत है।*

सामान्य टिप्पणी, मनहर सक्रिय एवं उत्साही छात्र है। अपने काम को जिम्मेवारी से पूरा करता है। लेखन पक्ष पर और काम करने की जरूरत है। इसे अपने सहपाठियों के साथ सहज व्यवहार करने की जरूरत है।

हिन्दी भाषाः मनहर सुनी व पढ़ी हुई कहानियों और कविताओं पर चर्चा कर पाता है, कहानी के खास संदर्भों को स्वयं की परिस्थिति से जोड़कर सवाल उठा पाता है। पुस्तकालय की किताबों को पढ़ने में रुचि ले रहा है।

इसी तरीके से बच्चे की समझ को विषयों की दक्षताओं के दायरे में जागरूक ढंग से लिखने का प्रयास किया जा रहा है। हमें लगता है कि बच्चों के साथ काम करते हुए नियमित रूप से बच्चे की समझ को लगातार देखते रहना आकलन का एक जरूरी पक्ष है जो सीखने की क्रिया को तो बेहतर बनाता ही है, शिक्षक को भी और बेहतर करने की प्रेरणा देता है। इस प्रक्रिया की कुछ चुनौतियां भी हैं जो आकलन के व्यवहार के दौरान आती हैं। पहली चुनौती तो हमारी धारणागत रूढ़ियों की है। पुरानी पद्धति से पढ़कर आए शिक्षकों को नए तौर-तरीकों में ढलने में वक्त लगता है। हम जिन पद्धतियों से आकलन करते आ रहे हैं, वे हमारी चेतना का हिस्सा हैं और वे शिक्षकों को सही भी लगती हैं और सुविधाजनक भी प्रतीत होती हैं। तीसरे, हमारे समाज का नजरिया भी सीखने को लेकर बहुत ही परंपरागत सोच पर आधारित है जो स्कूल में सीखने को खास तरह के अपने मापदण्डों से मापता है। चौथा पक्ष शिक्षक का खुद का विश्वास है, जो वह रचनात्मक ढंग से सीखने-सिखाने के तरीकों पर करता है।

पांचवां आयाम यह है कि प्रक्रियाओं को समझकर व्यवहार में लाने के लिए शिक्षकों के समूहों के साथ सघन प्रशिक्षण और नियमित समर्थन देने की जरूरत रहती है। आखिरी चुनौती यह है कि काम बहुत अधिक थकाने और मेहनत वाला है, इसलिए जब तक आंतरिक प्रेरणा से जुटे लोग इस काम में नहीं आते, वे बहुत ही सतही स्तर पर इन प्रक्रियाओं को अंजाम देते रहते हैं। ◆

लेखक परिचयः पिछले करीब 20 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत। बोध शिक्षा समिति के अलवर जिले के ग्रामीण कार्यक्रम में शिक्षक एवं अकादमिक समन्वयक के तौर पर करीब 13 साल कार्य किया। वर्तमान में तीन साल से अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के स्कूल में बतौर प्रिंसिपल कार्यरत हैं।